Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

LGBTQIA+ एक आलोचना एवं अधिकार हेतु आन्दोलन का इतिहास

संजय कुमार यादव
शोधार्थी

Article Info

Article History
Accepted : 20 Sep 2024
Published : 05 Oct 2024

Publication Issue :
Volume 7, Issue 5
September-October-2024

Page Number : 20-24

सारांश:
साहित्य माध्यम है, एक बहुत मजबूत बात कहने का। तभी तो कहते हैं, "समय के साथ चलने वाला साहित्य समय-समय पर अपने पाठकों को अपनी आलोचना करने का मौका प्रदान करता है, जिससे वह समय की मांग को समझकर अपना मूल्यांकन भी करता रहता है।"

आलोचना सामान्यतः रचना के गुण-दोष का पता करने का माध्यम समझा जाता है। निर्णय ही करना आलोचना समझा जाता है, लेकिन यही इसका एकमात्र उद्देश्य नहीं है। यदि इसी को मान लिया जाए, तो यह आलोचना शब्द को सीमित करना होगा। आखिर साहित्य क्या है? साहित्य की रचना का उद्देश्य क्या होना चाहिए? किसी भी रचना को साहित्य क्यों माना जाए? इन सभी प्रश्नों को साथ रखकर आलोचना आगे बढ़ती है।

आलोचना की इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, यदि साहित्य की बात करें, तो वर्तमान यानी समकालीन साहित्य का प्रमुख मुद्दा किन्नर समाज है। इन्हें हम अलग-अलग नामों से जानते हैं, जैसे हिजड़ा, ट्रांसजेंडर, छक्का आदि। लेकिन किन्नरों के अलावा, एलजीबीटी समुदाय के वे सभी लोग भी तीसरे समुदाय से संबंधित हैं, जो जननांगों से क्षतिग्रस्त नहीं होते, फिर भी यौन रुचि के कारण समाज में अलग नजरिए से देखे जाते हैं। इन्हें अक्सर किन्नरों से जोड़कर देखा जाता है, और इनके लिए छक्का,हिजड़ा और किन्नर शब्द का प्रयोग किया जाता है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है।

अगर हम LGBTQIA+ को परिभाषित करें, तो इसमें लेस्बियन, गे, बायसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, इंटरसेक्स और अन्य ऐसे लोग शामिल होते हैं, जिनमें 'विषमलैंगिकता' की उपस्थिति नहीं होती। भारत की बात करें तो LGBTQIA+ समुदाय में हमें एक विशेष समूह देखने को मिलता है, जिन्हें हिजड़ा या किन्नर के नाम से जाना जाता है। यदि हम इनके सांस्कृतिक पहलुओं या तौर-तरीकों की बात करें, तो वे न तो पूर्ण पुरुष होते हैं और न ही पूर्ण महिला। ऐसे समूह को किन्नर की परिभाषा दी जाती है। वर्तमान में, हम उन्हें थर्ड जेंडर यानी तीसरे लिंग के रूप में जानते हैं।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

LGBTQIA + को अगर अलग-अलग कर समझने का प्रयास करें तो उनकी परिभाषा कुछ इस प्रकार होगी-

L - लेस्बियन: लेस्बियन शब्द का उपयोग उन महिलाओं के लिए किया जाता है, जो दूसरी महिलाओं की ओर शारीरिक रूप से आकर्षित होती हैं।

G - गे: गे उन पुरुषों को कहा जाता है, जिनका आकर्षण महिलाओं की ओर नहीं होता, बल्कि वे अपने ही समलैंगिक पुरुषों की ओर आकर्षित होते हैं। इनमें महिलाओं के प्रति कोई शारीरिक आकर्षण नहीं होता; उनकी यौन इच्छाएं अपने समलैंगिक पुरुषों के प्रति होती हैं।

B - बायसेक्सुअल: बायसेक्सुअल व्यक्ति वह होता है, जिसे एक से अधिक लिंग के प्रति आकर्षण होता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई पुरुष है, तो जरूरी नहीं कि उसे केवल महिलाओं में रुचि हो; वह पुरुषों के प्रति भी आकर्षित हो सकता है। इस प्रकार, बायसेक्सुअल व्यक्तियों को पुरुष और महिला दोनों के प्रति आकर्षण होता है। हालांकि, कुछ मामलों में ऐसा भी देखा गया है कि व्यक्ति का आकर्षण दोनों लिंगों के प्रति हो सकता है, लेकिन वह शारीरिक संबंध केवल एक के साथ बनाना पसंद करता है।

T - ट्रांसजेंडर: ट्रांसजेंडर दो शब्दों से मिलकर बना है: 'ट्रांस' और 'जेंडर'। 'ट्रांस' का अर्थ है 'दूसरी स्थिति में होना', और 'जेंडर' का अर्थ है 'लिंग'। ट्रांसजेंडर शब्द का अर्थ है 'दूसरी स्थिति में लिंग'। एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति की पहचान ट्रांस महिला और ट्रांस पुरुष के रूप में होती है। यदि कोई व्यक्ति जन्म के समय स्त्री माना गया हो, लेकिन वह खुद को पुरुष के रूप में पहचानता है, तो उसे ट्रांस पुरुष कहा जाता है। इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति जन्म के समय पुरुष माना गया हो, लेकिन वह खुद को स्त्री के रूप में पहचानता है, तो उसे ट्रांस महिला कहा जाता है।

Q - क्वीर: क्वीर शब्द उन व्यक्तियों या समूहों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो अपनी पारंपरिक लैंगिकता और पहचान की सीमाओं से बाहर हैं।

I - इंटरसेक्स: इंटरसेक्स उन लोगों को कहा जाता है, जो अस्पष्ट यौन अंगों के साथ जन्म लेते हैं। सामान्यतः पुरुषों में (XY) गुणसूत्र होते हैं और महिलाओं में (XX) गुणसूत्र। लेकिन भ्रूण के निर्माण के दौरान इनकी बनावट में परिवर्तन हो सकता है, जिसके कारण बच्चों में ऐसे जननांग लक्षण दिखाई दे सकते हैं, जो न तो पूर्ण पुरुष होते हैं और न ही पूर्ण महिला। इंटरसेक्स व्यक्तियों का शारीरिक बनावट किन्नरों से अलग होता है; किन्नर व्यक्ति अपने शारीरिक रूप में पुरुष या महिला हो सकते हैं, लेकिन उनका मानसिक व्यवहार उसके विपरीत हो सकता है। सभी इंटरसेक्स व्यक्ति एक जैसे नहीं होते। हो सकता है कि किसी लड़के के रूप में जन्मे बच्चे में अंडकोष न हो, या किसी लड़की के रूप में जन्मी बच्ची में अंडाशय का अभाव हो।

A - एसेक्सुअल: एसेक्सुअल का अर्थ है ऐसे व्यक्ति, जिन्हें किसी भी लिंग के प्रति शारीरिक आकर्षण या रुचि नहीं होती।

जैसे कि हमने LGBTQIA+ को एक-एक करके समझा, परंतु इस समुदाय के लोगों को सामान्यतः समलैंगिक माना जाता है।

हमारे देश को आज़ाद हुए 78 साल बीत चुके हैं, फिर भी LGBTQIA+ समुदाय के लोग अपने सामाजिक अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे हैं। भारत के उच्चतम न्यायालय ने 6 दिसंबर 2018 को धारा 377 को गैर अपराधी घोषित किया, लेकिन अगर हम भारतीय समाज के इर्द-गिर्द देखें, तो हमें यह अनुभव होता है कि इस क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

इतिहास के संदर्भ में

जब से सृष्टि बनी है, तब से प्राकृतिक ने संसार को चलाने और आगे बढ़ाने हेतु पुरुष और महिला एवं उनके संबंधों का निर्माण किया। इसने विभिन्न लिंगों को धारण करने वाले मनुष्यों को तैयार किया। लेकिन हैरानी की बात यह है कि पुरुष और महिला से भिन्न लिंग को हमारे समाज में अप्राकृतिक माना जाता है। उन्हें परिवार का अंग बनने से दूर, समाज में रहने योग्य नहीं माना जाता है। जबकि आधुनिक भारतीय समाज में समलैंगिकता को समाज का अनिवार्य अंग मानने और अपनाने के पक्ष में जोर दिया जा रहा है, परन्तु असामान्य माने जाने वाले LGBTQIA+ लोगों को आज भी पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं हैं। उनका इतिहास भी प्राचीन माना जाता है। भारतीय समाज में विषमलैंगिक लोग यह मानते हैं कि किन्नरों के आशीर्वाद से उन्हें और उनके परिवार को आनंद एवं सुरक्षा प्राप्त होती है, जबकि उनका श्राप मनुष्य जीवन को बर्बाद कर देता है।

भारत में किन्नरों और समलैंगिकों के इतिहास की बात करें तो निम्नलिखित बातें दृष्टिगोचर होती हैं:

1. पवित्र पुस्तक भागवत पुराण में उल्लेख मिलता है कि जब भगवान विष्णु ने मोहिनी का अवतार धारण किया, तब उन्हें देखकर भगवान शिव मोहित हो गए। उनके मिलन के फलस्वरूप भगवान अय्यप्पा का जन्म होता है।
2. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बुध ग्रह को पूर्ण पुरुष न मानकर नपुंसक लिंग के रूप में स्वीकार किया जाता है।
3. बाल्मीकि रामायण में एक उल्लेख मिलता है कि राजा भगीरथ का जन्म राजा दिलीप की दो विधवाओं के मिलन के पश्चात होता है, शिव के आशीर्वाद से। कुछ किंवदंतियों के अनुसार, जब भगवान राम, सीता माता और लक्ष्मण वनवास पर जा रहे थे, तब पूरी अयोध्या के स्त्री-पुरुष साथ जाने लगे, जिनमें किन्नर भी शामिल थे। जो भगवान राम के साथ वनवास जाने का जिद करने लगे। तब प्रभु ने सभी स्त्री-पुरुषों को लौट जाने के लिए प्रेमपूर्वक समझाया। ऐसे में सभी ने भगवान राम की आज्ञा मानकर अपने-अपने स्थान लौट गए, किंतु

राम ने कहीं भी किन्नरों का जिक्र नहीं किया। ऐसे में कोई भी किन्नर स्पष्ट आदेश प्राप्त नहीं कर पाया, और वे वहीं 14 वर्षों तक तपस्या करते रहे। जब राम वनवास से लौटकर आए, तब उन्हें यह सब वृतांत पता चला और उन्होंने वरदान दिया कि तुम सब की दुआ और आशीर्वाद सभी के लिए मंगलकारी सिद्ध होगा।

4. महाभारत में शिखंडीनी और अर्जुन का वृहनाला के रूप में तथा अर्जुन के पुत्र अरावन की शर्त पर कृष्ण मोहिनी रूप बदलकर अरावन से शादी करते हैं। कृष्ण, पुरुष होते हुए भी स्त्री रूप में अरावन से शादी रचाते हैं, इसलिए उन्हें किन्नर माना गया।
5. मध्यकाल की बात करें तो अमीर खुसरो के अनुसार आक्रमणकारी अलाउद्दीन और उसके गुलाम मलिक काफूर दोनों के बीच संबंध थे, जो समलैंगिक संबंध के रूप में माने गए।
6. आज 19वीं सदी में सभी की तरह LGBTQIA+ लोगों के विकास की अवधि होती है, किंतु ब्रिटिश साम्राज्य के उदय के कारण भारत में भी ब्रिटिश विचारधारा के प्रसार से समलैंगिक संबंधों को अपराध माना जाने लगा।

अगर हम भारत में LGBTQIA+ के संदर्भ में हुए आंदोलनों पर दृष्टि डालें, तो हमें निम्नलिखित छोटे-बड़े आंदोलनों का अनुभव होता है:

1. **1960 ईस्वी** में, ब्रिटिश शासन के दौरान, समलैंगिकों के शारीरिक संबंध को अप्राकृतिक माना जाता था और इसे धारा 377 के तहत अपराध माना गया।
2. आजादी के बाद **26 नवंबर 1949** को अनुच्छेद 14 के तहत समानता का अधिकार लागू किया गया, लेकिन तब भी समलैंगिकता को एक आपराधिक और अप्राकृतिक अपराध ही माना जाता था।
3. वर्षों बाद, **11 अगस्त 1992** को समलैंगिकता के अधिकार हेतु पहला ज्ञात विद्रोह दिल्ली में पुलिस मुख्यालय के बाहर आयोजित किया गया।
4. **1999** में, कोलकाता शहर ने पहली बार भारत की समलैंगिक प्राइड मार्च निकाली, जिसे "कोलकाता रेनबो प्राइड" नाम दिया गया। इसमें केवल 15 लोग ही शामिल हुए थे।
5. **2009** में नाज़ फाउंडेशन बनाम दिल्ली सरकार एनसीटी के मामले में, दिल्ली के उच्च न्यायालय ने यह स्वीकार किया कि धारा 377 के तहत दो समलैंगिकों के निजी शारीरिक संबंध बनाने पर अनुचित प्रतिबंध लगाया गया था। यह अनुच्छेद 14, 15, 19 और 21 में निहित मूल अधिकारों का उल्लंघन था।
6. सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की पीठ ने **2009** में नाज़ फाउंडेशन बनाम भारत संघ मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय के उस फैसले को पलटा, जिससे आईपीसी की धारा 377 को रद्द कर समलैंगिकता को पुनः अपराध घोषित कर दिया गया।
7. समलैंगिकता को अप्राकृतिक अपराध की सूची से हटाने हेतु **2015** में कांग्रेस के सांसद शशि थरूर ने एक विधेयक संसद के समक्ष पेश किया, जिसे 24 के 71 वोटों से हरा दिया गया।

8. **2017** के अगस्त में, सुप्रीम कोर्ट ने निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी, जिससे LGBTQIA+ के कार्यकर्ताओं में उम्मीद की एक नई किरण दिखाई दी।
9. **6 सितंबर 2018** को सुप्रीम कोर्ट ने सर्वसम्मति से एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसमें सहमति से वयस्क समलैंगिकों के बीच शारीरिक संबंध को अपराध नहीं माना गया, और इस प्रकार धारा 377 को खत्म कर दिया गया।

इस प्रकार, 377 के खिलाफ LGBTQIA+ के लोगों की लड़ाई तो खत्म हुई, लेकिन समान अधिकारों की सबसे बड़ी लड़ाई अभी भी जारी है।

सन्दर्भ सूचि

1 दृष्टि आईएस ब्लॉग

LGBTQIA+ समुदाय: एक विस्तृत चर्चा

https://www.drishtiias.com/hindi/blog/lgbtqia-community-a-detailed-discussion

2 News Nation

Arjun Kyu Bana Tha Kinnar: महाभारत के महान योद्धा अर्जुन कैसे बने थे किन्नर

https://www.newsnationtv.com/religion/dharm/arjun-kyu-bana-tha-kinnar-how-did-arjun-the-great-warrior-of-mahabharata-become-a-eunuch-473418.html

3 ABP न्यूज़

Mahabharat: अर्जुन पुत्र अरावन से किन्नर करते हैं शादी, दक्षिण भारत में है मंदिर

https://www.abplive.com/lifestyle/religion/mahabharat-kinnar-marries-arjun-son-aravan-temple-in-south-india-shri-krishna-mohini-1454001